विवरण

1. चाय बोर्ड अपने कार्यालयों के माध्यम से तथा विदेश स्थित भारतीय मिशनों के माध्यम से विभिन्न देशों में भारतीय चाय का जोरदार संवर्धन कर रहा है । इसमें विदेशों में व्यापार मेलों तथा प्रदर्शनियों में प्रधान रूप से भारतीय पैक प्रस्तुत करना, विदेशों के चाय आयातकों को भारत के दौरे पर बुलाना और अन्य माध्यमों से प्रचार शामिल है ।

2. अन्य पेयों के मुकाबले के पेय के रूप में चाय की कुल खपत बढ़ाने के लिए अन्य निर्यातक देशों के सहयोग से विदेशों में चाय के व्यापक संवर्धन के लिए स्थापित चाय परिषदों द्वारा किए गए प्रयत्नों के लिए चाय बोर्ड सहायता देता है ।

3. विभिन्न रूपों में भारतीय चाय का निर्यात बढ़ाने के लिए भारतीय चाय व्यापार निगम नामक सरकारी क्षेत्र के एक संगठन की भी स्थापना की गई है ।

4. भारत से विदेशों के चुनिंदा बाजारों में वहां के स्थानीय मिश्रणकर्ताओं, पैकरों के सहयोग से पैकट बन्द चायों चाय थैलियों के सीधे निर्यात बढ़ाने के लिए भारतीय निर्यातको को संवर्धनात्मक सहायता प्रदान करना भी भारत सरकार के तत्वावधान में चाय बोर्ड द्वारा किया जा रहा एक संवर्धन कार्य है ।

पटसन उत्पादों का निर्यात

1747. **श्री नवाब सिंह चौहान** : क्या **वाणिज्य तथा नागरिक पूर्ति और सहकारिता** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले दो वर्षों में, प्रति वर्ष, पटसन से बना सामान कितना और किस किस देश को निर्यात किया गया ;

(ख) क्या कुछ अन्य देशों से प्रतिस्पर्धा के कारण भारत को उनके निर्यात में कुछ हानि उठानी पड रही है ;

(ग) यदि हां, तो उन देशों के नाम क्या हैं और इस सम्बन्ध में क्या उपचारात्मक उपाय किये जा रहे हैं ?

वाणिज्य तथा नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्री (श्री मोहन धारिया) : (क) से (ग). एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है । [**ग्रन्थालय में रखा गया । देखिए** संख्या एल० टी०--505 77]

काजू का निर्यात

1748. **श्री नवाब सिंह चौहान** : क्या **वाणिज्य तथा नागरिक पूर्ति और सहकारिता** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले दो वर्षों में विदेशों को, वर्षवार, एवं देश वार, कितना काजू निर्यात किया गया और उससे कितनी विदेशी मुद्रा अर्जित की गई ;

(ख) क्या कुछ अन्य काजू उत्पादक देशों के मुकाबले पर आ जाने से देश को हानि हो रही है ; और

(ग) क्या इस सम्बन्ध में कोई उपचारात्मक उपाय किया जा रहा है ?

वाणिज्य तथा नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्री (श्री मोहन धारिया) : (क) पछले दो वर्षों के दौरान काजू (गिरियों) के देशवार निर्यातों और उनसे प्राप्त विदेशी मुद्रा का ब्यौरा निम्नोक्त प्रकार है :—

मात्रा—मे० टन
मूल्य—लाख रु० में ।

देश	1975–76		1976–77*	
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
सं० रा० अमरीका	22192	3948	17506	3691
सोवियत संघ	14436	2508	15638	2933
जापान	3862	745	5202	1166
कनाडा	3528	630	3436	732
आस्ट्रेलिया	2206	414	2232	481
नीदरलैंड	1491	273	1635	331
ब्रिटेन	899	160	887	190
जर्मन लोक तांत्रिक गणराज्य	266	42	658	112
अन्य	4760	893	4241	945
योग	53640	9613	51435	10581

* 1976–77 वर्ष के आंकड़े अनन्तिम हैं ।

(ख) कुछ काजू उत्पादक देशों ने काजू को छीलने तथा काजू की गिरियों के निर्यात की व्यवस्था करली है । इससे कच्चे काजू की उपलब्धता में कमी आई है, जिसका हमें आयात करना होता है । 1976–77 में हमारे निर्यात तो फायदेमन्द ही रहे (प्रति मे० टन इकाई मूल्य 1792 रु०) काजू उत्पादक देशों के निर्यातों से भारत की काजू की निर्यात बिक्री को कोई खतरा नहीं है ।

(ग) काजू की यथा सम्भव अधिकतम मात्रा का आयात करने तथा भारत में काजू के उत्पादन को बढ़ाने के अपने प्रयत्नों को हमने तेज कर दिया है ।

पर्यटकों से विदेशी मुद्रा आय

1749. **श्री के० लक्कप्पा :** क्या **पर्यटन और नागर विमानन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि विदेशी पर्यटकों से वर्ष 1977–78 के दौरान भारत को कितनी राशि की विदेशी मुद्रा प्राप्त होने की सम्भावना है ?